STEPPING STONE SCHOOL (HIGH)

CLASS: VII

Worksheet - IX

Subject: Hindi Language **Date: 06-05-2020**

Topic: Comprehension **Time Limit: 40 mins**

बहुत पुरानी बात है। शांतनु नाम के एक राजा हस्तिनापुर में राज्य करते थे। उन्हें शिकार खेलना अति प्रिय था। एक दिन राजा शांतनु ने नदी के तट पर एक बहुत सुंदर स्त्री को देखा। वह कोई साधारण नारी नहीं बल्कि देवी गंगा थी। परंतु राजा शांतनु इस बात से अनभिज्ञ थे।

राजा ने पूछा, ''हे सुंदरी! आप कौन हैं? मेरी अभिलाषा है कि आप मेरी अर्धांगिनी और रानी का स्थान ग्रहण करें। मैं अपनी संपूर्ण संपत्ति और राज्य आपको दे दूँगा। क्या आप मुझसे विवाह करेंगी?'' देवी गंगा ने अपनी आँखें नीचे झुका लीं और उत्तर दिया, ''राजन, यदि आप मुझसे विवाह करना चाहते हैं तो आपको वही स्वीकार करना होगा जो मैं चाहूँगी।''

राजा ने उत्तर में कहा, ''आप जो भी कहेंगी, वह मुझे स्वीकार होगा।''

गंगा ने कहा, ''इससे पूर्व कि आप मुझसे सहमत हों, कृपया मेरी बात सुन लें। तभी मैं आपकी पत्नी का स्थान ग्रहण कर सकती हूँ। आप और आपके कर्मचारी कभी यह प्रश्न नहीं करेंगे कि मैं कौन हूँ और कहाँ से आई हूँ। मैं अपनी इच्छानुसार किसी भी काम को कर सकूँ, इसकी अनुमति मुझे देनी होगी, चाहे वह कार्य आपकी दृष्टि में उचित हो या अनुचित। आप मुझपर कभी क्रोधित नहीं होंगे और न ही मुझे विचलित तथा अप्रसन्न करेंगे। यदि आपने ऐसा किया तो मैं उसी क्षण आपको त्याग दूँगी।''

राजा शांतनु तुरंत सभी बातों से सहमत हो गए। उनका विवाह हो गया और वे सुखी जीवन व्यतीत करने लगे। राजा यह देखकर हर्षित थे कि उनकी पत्नी एक आदर्श रानी थीं और अपने कर्तव्यों का पालन करती थीं।

कुछ वर्षों पश्चात उनकी पहली संतान का जन्म हुआ। एक दिन शांतनु ने देखा कि उनकी पत्नी बालक को नदी की ओर ले जा रही हैं। नदी के तट पर खड़े होकर उन्होंने बालक को जल में प्रवाहित कर दिया। शांतनु भयभीत हो उठे, परंतु उन्हें अपना वचन याद आ गया कि वे पत्नी से कभी कोई प्रश्न नहीं करेंगे। समय व्यतीत होता गया। शांतनु की सात संतानें हुईं परंतु गंगा ने एक-एक करके सबको नदी में बहा दिया।

जब आठवें का जन्म हुआ, गंगा उसे भी नदी की ओर ले गईं परंतु इस बार शांतनु के धैर्य की सीमा टूट गई और वे चिल्लाए, ''रुको, रुक जाओ।'' यह कहते हुए उन्होंने रानी के सामने हाथ फैलाकर बालक को नदी में न फेंकने की भीख माँगी।

शांतनु अधीर होकर बोले, ''तुम हर बार हमारे बच्चे को नदी में क्यों फेंक देती हो?''

रानी ने उत्तर दिया, ''राजन, आपने वचन दिया था कि आप मुझसे कभी किसी प्रकार का प्रश्न नहीं पूछेंगे? आपने अपना वचन भंग किया है, इसलिए मुझे आपको छोड़कर जाना होगा। मैं गंगा हूँ।''

''देवी गंगा!'' राजा ने आश्चर्यचकित होकर पूछा। ''आप यहाँ कैसे आईं?'' गंगा ने कहा, ''राजन! मैं इस संसार में एक श्राप के कारण आई हूँ। वशिष्ठ ने अष्ट वसुओं के उत्पात से क्रोधित होकर उन्हें मृत्युलोक में मनुष्य योनि में जन्म लेने का श्राप दिया। आठों वसुओं ने ऋषि से क्षमा माँगी और प्रार्थना की कि वे उनके अपराध का इतना बड़ा दंड न दें। वशिष्ठ ने कहा— तुममें से सात वसुओं का तो जन्म लेते ही उद्धार हो जाएगा परंतु महाउत्पाती आठवाँ वसु पृथ्वी पर ही रहेगा। आपकी जिन संतानों को मैंने नदी में बहा दिया, वे वसु नाम के देवगण थे। वशिष्ठ के श्राप को पूर्ण करने के लिए उनका पृथ्वी पर जन्म लेना आवश्यक था। उन्हें श्रापमुक्त करने के लिए ही मैंने इस संसार में आकर आपसे विवाह किया और उन्हें जन्म दिया। वसु स्वर्ग जाना चाहते थे अतः जैसे ही उन्होंने जन्म लिया, मैंने उन्हें नदी में प्रवाहित कर दिया। परंतु यह अंतिम बालक है, मैं इसे नदी में नहीं बहाऊँगी। इसे मैं अपने साथ ले जाऊँगी। जब यह बड़ा हो जाएगा तब आकर आपको सौंप दूँगी।''

गंगा बालक को लेकर चली गईं। शांतनु अत्यंत दुखी अवस्था में महल लौट आए।

शब्दार्थ

अनभिज्ञ—अनजान; अर्धांगिनी—पत्नी; विचलित—घबराया हुआ; व्यतीत करना—बिताना; उद्धार—छुटकारा

प्रश्न

1. गंगा अपने नवजात शिशुओं को नदी में क्यों बहा देती थीं?
2. शांतनु के कितने पुत्र हुए और अंतिम पुत्र को गंगा साथ क्यों ले गईं?
3. देवी गंगा राजा शांतनु को छोड़कर क्यों चली गईं?
4. वसुओं को क्या श्राप मिला था? यह श्राप किसने और क्यों दिया?